अध्ययन सामग्री ! -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - IV

प्रश्नपत्र - चार

सुमन कुमारी

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'लेटी' भाग - III

इस प्रकार

प्लेटो की कला अनुकरण से नहीं अनुकरण के विषय से है जाहिर है कि प्लेटो ने काव्य का निषेध अनुकरण का अनुकरण होने मात्र, होने के कारण नहीं किया बल्कि अनैतिक होने के कारण किया है। प्लेटो के अनुकरण के संबंध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्लेटो के मत से मूल सत्य 'प्रत्यय' (Idea) है उस सत्य प्रत्यय का अनुकरण प्रकृति है और उस प्रकृति का अनुकरण कला कृति अथवा कविता में प्रकृति होता है। अनुकरण का अनुकरण होने के कारण कविता सत्य से तीन गुना दूर हो जाती है। प्लेटो अपनी बात कुर्सी, मेज बनाने वाले एक बढ़ई का उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं वे कहते हैं रचनाकार वस्तु जगत के चीजों के इस तरह अनुकरण से प्रभावित होता है प्लेटो ने स्पष्ट किया कि अनुकर्ता कवि या चित्रकार यथार्थ वस्तुओं का चित्रण नहीं करते, प्रतीयमान वस्तुओं का चित्रण करते हैं क्योंकि मूल में यथार्थ वस्तु, महान शिल्पी (परमात्मा) की बनाई हुई है कवि तथा चित्रकार दोनों ही उसके अनुकरण या

DATE / /

नकल करते हैं। उदाहरण के लिए, बढ़ई जिस पलंग या कुर्सी को मनाकर तैयार करता है वह विराट स्रष्टा (ईश्वर) के मस्तिष्क में बने रूप की छाया मात्र है फिर भी बढ़ई सत्य के काफी निकट पहुँचा है लेकिन चित्रकार तो उस सेलांग पलंग का चित्र बनाता है वह तो यथार्थ से दो गुना, तिगुना दूर चला गया है। अभिप्राय बढ़ई जो बनाता है वह वास्तविक (सत्य पलंग) का निर्माण नहीं करता है, वह जो बनाता है वह वास्तविक का अनुकरण मात्र है अतः उस मूल पलंग का निर्माता है ईश्वर। दूसरा उसी का निर्माण करता है बढ़ई और तीसरा उसी पलंग का चित्र बनाता है चित्रकार। ईश्वर द्वारा पलंग की रचना वास्तविक है, शेष दोनों ही उसके अनुकर्ता हैं इसलिए बढ़ई सत्य से दूना और चित्रकार सत्य से तीगुना दूर हो जाता है जो बात चित्रकार पर लागू होता है वही कवि पर भी। क्योंकि वो दोनों ही एक ही कोटि के प्राणी हैं दूसरे शब्दों में यह बात इस प्रकार कही जा सकती है कि काव्य मूल प्रकृति का अनुकरण है और प्रकृति सत्य का अनुकरण करती है। अनुकरण सत्य का अनुकरण का अनुकरण (Imitation of Imitation) होने के कारण कला वास्तविकता से

DATE / /

परम सत्य से कला का तिहरा अलगाव के कारण वह मिथ्या या झूठ है प्लेटो के शब्दों में कविता या कला सत्य से तिगुना दूर होती है। अपने ही सिद्धांत कथन को प्लेटो अपने उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं– "उनका कहना है कि संसार में प्रत्येक वस्तु का एक नित्य रूप होता है वह प्रत्यय या विचार में ही निहित रहता है और यह रूप अनुकरण का अनुकरण है, छाया की छाया है, प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब है अर्थात नकल या मिथ्या है प्लेटो अपना यह तर्क सभी कलाओं पर लागू करते हैं। प्लेटो का विचार है कि होमर और हैसियोड जैसे कवियों के काव्य अथवा सोफोक्लीज जैसे नाटककारों के नाटक भी अपवाद नहीं हैं इस कवियों को पढ़ने, देखने या सुनने से अच्छे नागरिकों का निर्माण आदर्श राज्य के लिए संभव नहीं है। नैतिकतावादी आग्रहों से प्रेरित होकर प्लेटो काव्य और कलाओं की निन्दा करते हैं। उनके कुछ तर्क इस प्रकार हैं–

1) होमर के महाकाव्यों 'इलियड' और ओडिस 'ओडेसी' में देवताओं का चरित्र असत्य भी है और अनुचित भी। उनमें देवत्व कहाँ है और देवत्व नहीं है तो वे मनुष्यों के उन्नयन में सहायक नहीं हो सकते।

PAGE NO.
DATE / /

1) होमर और हैसियड के काव्य में ऐसे स्थल प्रायः आते हैं जो पाठक को वीर और साहसी के बदले दुर्बल और कायर बनाते हैं। काव्य तो ऐसा होना चाहिए जो नव युवक में शौर्य की भावना भरे उनके चरित्र का निर्माण करे और मृत्यु की लालसा के लिए उन्हें तैयार करे। प्लेटो का प्रसिद्ध कथन है – "दासता मृत्यु से भी बुरी चीज है।"

(b) प्रायः कवि भोग और विलास की भावना से भरकर आवेशपूर्ण, कामुकता पूर्ण, भावुकता की सृष्टि करते हैं इनसे शुद्धता और संयम में बाधा पड़ती है तथा चरित्र हीनता भोगलिप्सा और अराजकता फैलती है।

(c) होमर के काव्य में ऐसी कहानियाँ भरी पड़ी हैं जिनमें दुष्ट जन सुख भोगते हैं और सज्जन दुःख से व्याकुल रहते हैं जहाँ सदाचार के लिए दुःख और दुराचारियों के लिए सुख, वैभव और पुरस्कार मिलेगा वहाँ नैतिकता कैसे टिकेगी। कोमल बुद्धि वाले बालकों पर इन कहानियों का प्रभाव अनिष्टकारी होता है।